CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 20th April 2021, Revised on 26th April 2021, Accepted 27th April 2021

आलेख

वैश्वीकरण चुनौतिया एवं सम्भावनाएं

* रामभजन साकेत
पीएच.डी. शोध छात्र, अर्थशास्त्र–विभाग
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट सतना (म0 प्र0)
Email- rambhajansaket1985@gmail.com

मुख्य शब्द– *अहिंसात्मक साधन, नकारात्मक विचार, आन्तरिक भान्ति, अन्तर्मन की साफ–सफाई आदि।*

सार संक्षेप

शब्द वैश्वीकरण का उपयोग अर्थ शास्त्रियों के द्वारा 1980 में किया जाता है जबकि 1960 के दशक में इसका उपयोग सामाजिक विज्ञान में किया जाता था लेकिन 1980 के उत्तरार्द्ध और 1990 तक इसकी अवधारणा लोकप्रिय नही हुई वैश्वीकरण की सबसे पुरानी सैद्धांतिक अवधारणाओं को उद्यमी से मंत्री बने एक अमेरिकी चार्ल्स तेज रसेल द्वारा लिखा गया वैश्वीकरण को एक सदियों लंबी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो मानव जनसंख्या और सभ्यता के विकास पर नजर रखती है जो 40 वर्षो में नाटकीय ढंग से त्वरित हुई है। वैश्वीकरण के प्रारंम्भिक रूप रोमन साम्राज्य पार्थियन साम्राज्य और हान राजबंश के समय में पाए जाते थे जब चीन पार्थियन साम्राज्य की सीमा तक पहुंच गया और आगे रोम की तरफ बढ गया इस्लामी स्वर्ण युग भी एक उदाहरण है जब मुस्लिम व्यापारियों ने पुरानी दुनिया में प्रारम्भिक विश्व अर्थव्यवस्था की स्थापना की जिसके परिणाम स्वरूप फसलों व्यापार ज्ञान और प्रौद्योगिकी का वैश्वीकरण, हुआ और बाद में मंगोल साम्राज्य के दौरान जब रेशम मार्ग पर अपेक्षाकृत अधिक एकीकरण था व्यापक अर्थ में वैश्वीकरण की शुरूआत 16 वीं शताब्दी के अंत से पहले हुई सोन और विशेष रूप से पुर्तगाल में हुई पुर्तगाल का वैश्विक विस्तार विशेष रूप से एक बड़े पैमानों पर महाद्विपों अर्थव्यवस्था और संस्कृतियों से जुड़ा है ं। पुर्तगाल का अफ्रीका के अधिकांश तटों और भारतीय क्षेत्रों के साथ विस्तार और व्यापार वैश्वीकरण का पहला प्रमुख व्यापारिक रूप था विश्व व्यापार की एक लहर उपनिवेषवाद और सांस्कृतिक ग्रह्यता दुनिया के सभी कोनो तक पहुंच तथा 19वीं सदी को कभी–कभी वैश्वीकरण का प्रथम युग भी कहा जाता है। द्वितीय विश्व युद्व के बाद से वैश्वीकरण मुख्य रूप से अर्थशास्त्रियों, व्यापारिक हितों और राजनीतिज्ञों, के नियोजन का परिणाम है जिन्होने संरक्षणवाद और अंतराष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्यों को पहचानना उनके काम का नेतृत्व ब्रेटन वुड सम्मेलन एवं कई सस्थाओं ने किया जिसका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनीकृत प्रक्रिया का निरीक्षण को बढ़ावा देना और इसके विपरीत प्रभावों का प्रबंधन करना था।

शोध प्रविधि

प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर शोध पर में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस हेतु पुस्तकों, व्यक्तिगत साक्षात्कार और इन्टरनेट के माध्यम से शोध पत्र का निर्माण किया गया है।

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओ या घटनाओं के विश्व स्तरपर रूपांतरण की प्रकिया है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा एक साथ कार्य करते है। यह प्रकिया आर्थिक तकनीकी सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है, वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के संदर्भ में किया जाता है अर्थात व्यापार विदेशी प्रत्यक्ष निवेष पूंजी प्रवाह प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंर्तराष्ट्रीय अर्थ व्यवस्थाओं में एकीकरण से है।

थामस एक फ्राइड मैन ''दुनिया को सपाट होने के प्रभाव की जांच करता है। और तर्क देता है कि वैश्वीकृत व्यापार आउटसोर्सिंग आपूर्ति के आकलन और राजनीतिक दलों ने दुनिया को बेहतर और बदतर क्षेत्रों दोनो रूपों में बदल दिंया।''

हर्मन डेली का तर्क है कि कभी–कभी अंतराष्ट्रीयकरण और वैश्वीकरण शब्दों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है लेकिन औपचारिक रूप से इसमें मामूली अंतर है अंतराष्ट्रीय शब्द का उपयोग अंतराष्ट्रीय व्यापार संबंध और संधियों आदि के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

समस्या

जब हम किसी परिघटना की व्यवस्था करते है तो सबसे पहले यही प्रश्न खड़ा होता है कि कहा से शुरू करें ? मामला अगर वैश्वीकरण की व्यापक और जटिल परिघटना की व्याख्या का हो तो यह समस्या ओर बढ़ जाती है। वैश्वीकरण जिसे हम भूमंडलीकरण,जगतीकरण आदि नामों से भी जानते है आखिर इस प्रत्यय का अर्थ क्या है। सवाल यह भी है कि किस चीज का वैश्वीकरण हो रहा है और किसका नहीं

अक्सर इस बात पर चर्चा होती है तो यही दो बातें सामने आती है। या तो आप इसके पक्ष में है या विपक्ष में वैश्वीकरण पक्ष विपक्ष का सामूहिक हिस्सा बन गया है।

उद्देश्य

- वैश्वीकरण की चुनौतियों से जूझता हुआ देश का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण की महामारी से होने वाली आर्थिक क्षतिपूर्ति का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण की समस्याओं का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण की चुनौतियों को समझना।
- वैश्वीकरण की विशेषताओं से होने वाले लाभांश का अध्ययन करना।

समाधान

''वैश्वीकरण का हमारे जीवन में इस तरह समाहित हो गया है कि हम इसे पहले से ही समझते है समाज मे होने वाली प्रत्येक सामाजिक घटना के लिए वैश्वीकरण को जिम्मेदार ठहराने की प्रवृत्ति भी आम हो गई है अक्सर हमारे देश में होने वाले दलितों महिलाओं के उत्पीड़न तथा साम्प्रदायिक नरसंहार के लिए भी वैश्वीकरण के तहत चल रही आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रकियाओ ने शोषण के नये रूपों को जन्म दिया है लेकिन भारतीय समाज में होने वाले सामाजिक उत्पीड़न के लिए मुख्यतः हमारे समाज –संस्कृति का पिछड़ा हुआ स्वरूप है वैसे तो यह सर्वमान्य सत्य है कि सामाजिक परस्पर संबंधित है लकिन कई बार यह सर्वमान्य सत्य हमे गलत नतीजो तक भी पहुंचा सकता है हमारे यहां वैश्वीकरण को लेकर विश्लेषण कम और लोकरंजकता ज्यादा दिखाई देती है, यह प्रवृत्ति प्रगतिशील दायरो से लेकर स्वयंसेवी क्षेत्र तक मौजूद है। ऐसा लगता है कि विष्लेषण का आभाव इसके समर्थक और विरोधी दोनो को स्वीकार्य है अक्सर वैश्वीकरण का विरोध स्वदेशी की रक्षा और विदेशी के विरोध के रूप में फलीभूत होता है। इस समझ का कारण कहीं न कहीं हमारी इतिहास की समझ में निहित है आज दुनिया के किसी भी कोने पूंजी की मुक्त आवाजाही के लिए देशों के बीच खड़ी की गई आर्थिक दीवारो को गिराया जा रहा है लेकिन श्रम आज भी देश की सीमाओं में कैद है मजदूर

को दूसरे देश में श्रम करने जाने के लिए वीजा के सख्त नियमों से गुजरना पड़ता है हमारा समय पूंजी के वैश्वीकरण का समय है जो की साम्राज्य की बदलती हुई रणनीति के रूप में सामने आया है। हम इतिहास पर नजर दौड़ाते है तब पाते है कि सामाज्यवाद और उपनिवेष की ये दो बड़ी घटनाये अलग–अलग समय में स्वतंत्र रूप से पैदा हुई है जो सबसे पहले 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में डच उपनिवेषों के साथ हुई 90 के दशक में पूंजी को विश्वविजय बनाने की वैश्वीकरण की यह प्रक्रिया जोर शोर से शुरू की गई आर्थिक उदारीकरण, व्यापारीकरण व निजीकरण को सभी समस्याओं के मूलमंत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया श्रमिक अधिकारियों पर लगाम लगायी गई अर्थव्यवस्था के नए उभरे क्षेत्र में श्रमिक अधिकार सिरे से नादारद थे वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया के तहत आयी त्रासदीयों और उसकी जटिलताओं को समझने की जरूरत है।

आर्थिक क्षेत्र में

1. औद्योगिक उत्पादन का लगभग विश्व व्यापी हो जाना
2. आयात निर्यात बन्धनों का लगभग समाप्त होना
3. वित्तीय पूंजी का उत्पादक पूंजी पर वर्चस्व तथा इसके आवारा रूप का उद्भव
4. बाजार केंन्द्रित आर्थिक नीतियों पर निर्विरोध सर्वसम्मति के उभरने का दावा।
5. वैश्विक पूंजी के लगातार राष्ट्र–राज्य की सीमाओं से स्वतंत्र होना।

निष्कर्ष

सोवियत संघ की समाप्ति के बाद विश्व राजनीति के एक ध्रवीकरण। पूंजीवादी जनतंत्र एवं बाजार केन्द्रित अभिशासन के राजनीतिक आदर्श होने का दावा। पूंजी के वैश्वीकरण के इस दौरे में एक ओर तो समृद्धि के टापू ऊंचे होते जा रहे है वहीं दूसरी ओर इन टापूओं के चारों ओर शोषण और गैर समुद्र फैलता जा रहा है सयुक्त राष्ट्रसंघ के खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है। कि दुनिया आज भी 85 करोड़ 50 लाख ऐसे बदनसीब 10 प्रतिशत विकास दर प्राप्त करने का दावा कर रहे है।

सन्दर्भ

1. शैला एल कोचर वैश्वीकरण अैर संबंध, पृ. 10 एवं 11
2. हर्स्ट ई चार्ल्स (समाजिक असमानता) पृ. 8 एवं 9
3. रामशरण जोशी, नीति मार्ग, जनवरी 2013, पृ. 80
4. दैनिक भास्कर समाचार पत्र 11/01/2016

**** Corresponding Author***

रामभजन साकेत

पीएच.डी. शोध छात्र, अर्थशास्त्र–विभाग

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय

चित्रकूट सतना (म0 प्र0)

Email- rambhajansaket1985@gmail.com